THE STATE OF THE S Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri देववाणी प्रेने शिक 10.3



# देववाणी-प्रवेशिका द्वितीय भाग (क्ना दो के लिये)

अनस्याप्रसाद भट्ट

प्रधानाचार्यः श्रीकार्तिकेय संस्कृत विद्यालय, भट्टवाड़ी ( श्रगस्त्यमुनि ) चमोली, उत्तराखण्ड



चौखम्बा विद्यामवन, वारारासी-१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

प्रकाशक्तुंबंद्रसेष्ठिं त्राप्ति वार्षां ने वार्णासी Chennai and eGangotri

Water Constitution of

मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

संस्करण: प्रथम, वि० संवत् २०२२

Chowk, Varanasi-l

(INDIA) 1965

Phone: 3076

# सम्मतियाँ

( ? )

गुणप्राहिणाम् अग्रे इति संस्तुवन् हर्षमनुभवामि यत् श्री अनस्या-प्रसादभद्दमहाभागः द्वितीयकश्चायां प्रवेशं लभमानानां बालानाम् सुगमसंस्कृतभाषायाम् व्यावहारिकसरलसरसप्रयोगाणाम् प्रचार-प्रसारहेतवे द्वितीयभागेन उपनिबद्धाम् देववाणीप्रवेशिकाम् व्यरचयत्, तदहं मन्ये इमं स्वर्णावसरमासाच सर्वेऽपि संस्कृतभाषाजिज्ञासवो बालाः पुस्तिकामिमामभ्यस्य संस्कृतभाष्यो कुशला भवेयुः, अन्ते च सरलोपायेन संस्कृतप्रचारार्थं प्रयतमानं लेखकमहाभागं धन्यवादेन सभाजयामि।

१०-5-53

श्रीदेवानन्दबहुगुणः प्रधानाचार्यः आदर्शे संस्कृत महाविद्यालयः रुद्रभयागः, गढ्वाल ( ? )

मैंने श्री अनस्या प्रसाद जी भट्ट प्रधानाचार्य श्रीकार्तिकेय संस्कृत विद्यालय, भट्टवाड़ी द्वारा रचित 'देववाणी प्रवेशिका' का दूसरा भाग पढ़ा, लेखक ने संस्कृत भाषा को सरलतम प्रणाली से बालकों के ही स्तर पर देववाणी शिक्षण का सुन्दर प्रयास किया है। भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान-विज्ञान से सम्पन्न वाणी के प्रति रुचि और उसके पठन-पाठन के आधुनिक ढंग से सम्पृष्ट पद्धित वस्तुतः प्रशंसनीय है। शब्दों का चयन बालक के स्तर पर किया गया है। प्रश्नोत्तर के साथ साथ प्रत्यक्ष पद्धित जिज्ञासु बालक के लिए नितान्त उपादेय है। सरल शब्दों में छन्दोबद्ध कविता दैनिक कियाओं से अनुप्राणित है—यह बहुत ही अच्छा है। कक्षा एवं बालक के स्तर पर प्रयोगात्मक तथा बोधात्मक शब्दों का चयन और उनके प्रयोग की दिशा में लेखक का पग महान् हर्षकारी है।

२६-७-६३

श्री उमेशचन्द्र मलासी प्रिन्सिपल, पव्लिक इण्टर कालेज, अगस्त्यसुनि

( 3 )

संस्कृत में बालोपयोगी प्राथमिक शिक्षण साहित्य की कमी है। श्री अनस्या प्रसाद जी भट्ट, प्रधानाचार्य श्रीकार्तिकेय संस्कृत विद्यालय, भट्टवाड़ी (अगस्त्यमुनि), चमोली, का यह प्रयास सन्तोषप्रद तथा प्रशंसनीय है। आशा की जाती है कि इनकी इस रचना से बालकों तथा शिक्षकों का उपकार होगा। अपने निरीक्षण पर उक्त विद्यालय में छोटे बालकों तथा बालिकाओं का संस्कृत साषण, वार्तालाप, किवतापाठ का अच्छा अभ्यास देखकर मुझे प्रसन्नता हुई है। श्री अनस्या प्रसाद जी इस विद्यालय के माध्यम से संस्कृत शिक्षा के प्रसार तथा प्रचार चेत्र में उत्साहपूर्ण सुन्दर कार्य कर रहे हैं जिसका भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता है।

११-१२-६३

श्री अलखनिरखन पाण्डेय, सहायक निरीक्षक, संस्कृत पाठशालाएँ बरेलीचेत्र, बरेली

(8)

'देववाणी प्रवेशिका' द्वितीय भाग देखा। पुस्तक सचमुच बालोपयोगी है और नये ढंग से लिखी गयी है। पुस्तक में शब्दों का प्रयोग, चित्र तथा अन्य कई बातें लेखक ने नये रूप में दी हैं, जिनसे संस्कृत पढ़ने में सरलता होगी। लेखक का प्रयत्न सराहनीय है।

७–२–६४

डॉ॰ हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' आचार्थ, एम॰ ए॰, पी-एच॰ डी॰ दून स्कूल, देहरादून

### पाक्कथन

अपने निरीक्षण के अवसर पर प्राइमरी कक्षाओं के बालक-बालिकाओं के मुख से, निर्धारित समस्त पाठ्य विषयों के सुन्दर ज्ञान के साथ, संस्कृत भाषण, वार्तालाप और अभिनय के सिहत सुस्वर कविता पाठ सुनने का प्रथम ग्रुभावसर मिलने से मुझे विस्मय और परम हर्ष होता है। श्री प्रधानाचार्य द्वारा लिखित 'देववाणी प्रवेशिका' का मैंने सम्यक् अवलोकन किया है।

पुस्तक की व्यावहारिकता का विशिष्ट महत्त्व में प्रत्यक्ष ही देख चुका हूँ।

प्रस्तुत पुस्तक में मैंने इन प्रमुख विशेषताओं को पाया है-

१—बालकों की समभ में शीघ आ जाने वाले शब्दों को चुनकर बालव्यवहारोपयोगी सरल वाक्य रचना कर दी गई है।

२—पढ़ाने में प्रश्लोत्तर और अभिनय की विधि कुशलता के साथ अपनाई गई है।

३—सप्तम पाठ में नदी के मनोहर तथा प्रात:कालिक स्नान आदि कृत्य के सुन्दर दृश्य को उपस्थित करके बालकों को हाथ धोना आदि व्यावहारिक क्रियाओं का ज्ञान कराने के साथ साथ शरीर की सफाई की शिक्षा भी प्रच्छन्न रूप से दी गई है।

४—पुस्तक में दी गई शब्दसामश्री, वाक्य एवं पद्यरचना बालकों को श्रिय लगने के साथ कौतुक सा उत्पन्न करके उनकी संस्कृत भाषा पढ़ने में अभिकृषि बढ़ाती है।

४— तेखक का सन् १६४६ ई० से प्राइमरी कश्राओं में संस्कृता-ध्यापन कार्य चल रहा है। लेखक का उद्देश्य संस्कृत को सर्वसाधारण की व्यवहार भाषा के चेत्र में लाना और पाठकों को संस्कृतव्याकरण को समम्मने की कठिनाइयों से मुक्त करना है। अपने प्रयोगात्मक अनुभव से बालकों की रुचि और उद्देश्य की सिद्धि को ध्यान में रखकर पुस्तक लिखी गई है। तृतीय, चतुर्थ और पद्धम भागों की सामग्री भी इसी प्रकार उत्तरोत्तर विशिष्टताओं से सम्पन्न है।

६ मार्च १६६४

श्री अव्बलसिंह रावत प्रत्युपविद्यालय निरीक्षक, मन्दाकिनीचेत्र, चमोली, उत्तराखण्ड



यस्याः प्रसादिवरहे मूकत्वं सर्वदा स्फुटम् । तामेकां वागिधष्टार्तां महादेवीग्रुपास्महे ॥ प्रथमः पाठः



बालिका लिखति।



एषा बालिका पठित ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.





एषा पट्टी अस्ति।

एषा लेखनी अस्ति।





एषा कङ्कातिका अस्ति । एषा अर्मिका अस्ति ।

निर्देश:—वाक्य पढ़ना आजाने पर पूरे वाक्य का हिन्दी अर्थ २,३ वार वालकों को केवल सुना दीजिए, अब पूछिए— 'वालिका लिखति' का क्या अर्थ है ? वालक ठीक उत्तर देते हैं।

द्वितीयः पाठः

एतत् किष् अस्ति ?



एषः गेन्दुकः अस्ति ।





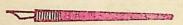
एषः दर्पणः अस्ति ।

एषः एकः वालकः अस्ति । एषः बालकः पठति ।



एषा एका बिडाली अस्ति। एषा बिडाली दुग्धम् पिबति।





एषा पट्टी अस्ति।

एषा लेखनी अस्ति।





एषा कङ्कतिका अस्ति । एषा अर्मिका अस्ति ।

निर्देश:—वाक्य पढ़ना आजाने पर पूरे वाक्य का हिन्दी अर्थ २,३ वार वालकों को केवल सुना दीजिए, अब पूछिए— 'बालिका लिखति' का क्या अर्थ है ? वालक ठीक उत्तर देते हैं।

द्वितीयः पाठः

एतत् किष् अस्ति ?



एषः गेन्दुकः अस्ति ।



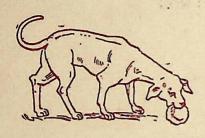


एषः दर्पणः अस्ति ।

एषः एकः बालकः अस्ति । एषः बालकः पठति ।



एषा एका बिडाली अस्ति। एषा विडाली दुग्धम् पिवति।

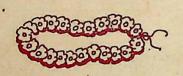




एषः एकः कुक्कुरः अस्ति । एषा एका घटी अस्ति ।

एंषः कुक्कुरः रोटिकाम्

खादति।





# एषा एका माला अस्ति । एतत् एकम् आग्रम् अस्ति ।

निर्देश:—वाक्य शुद्ध पढ़ना आजाने पर वालकों ुसे (चित्न की ओर संकेतकर) पूछ दिया जाय-एतत् किम् अस्ति ? विडाली किम् करोति ?

[8]

#### पश्चमः पाठः

# लोणि पद्यानि ।



(.6:)

प्रतिदिवसमहं पठामि पाठम् प्रतिदिवसमहं लिखामि लेखम् । प्रतिदिवसमहं पिबामि दुग्धम् प्रतिदिवसमहं करोमि खेलाम् ।।

(2)

त्वं पठिस सदा त्वं लिखसि सदा।
त्वं चलिस सदा त्वं इसिस सदा।।
त्वं करोषि कि प्रातःकाले?
त्वं करोषि कि सायङ्काले?

CC-0.Panini Kanya Maha Vioyalaya Collection.



एष बालकः पठित कदाचित्। एष बालकः लिखति कदाचित्।।

एष बालकः चलति कदाचित्।

एष बालकः इसति कदाचित्।।

#### षष्ठः पाठः

मानवः किम् करोति ? मानवः नेताभ्याम् पश्यति कर्णाभ्याम् गानम्शृणोति नासिकया सुगन्धिम् जिन्नति ।

दिचणेन हस्तेन लिखति।

मानवः आसने उपविश्वति, उत्तिष्ठति ।

ततः पादाभ्याम् चलति ।

मुखेन भोजनम् करोति, मुखेन जलम् पिवति, मुखेन कथाम् वदति, मुखेन पृच्छति, मुखेन हसति। यस्मिन् समये हसति, तस्मिन् समये दन्ताः हश्यन्ते। शुक्काः दन्ताः मनोहराः भवन्ति।

निर्देश: — आँख आदि के स्पर्श और लिखने आदि अभिनय के साथ पाठ पढ़ाना चाहिए, प्रश्न: — मानवः केन पश्यति ? केन लिखति ? मुखेन किम् किम् करोति ?

# हर हर गङ्गे।



एषा नदी वहति अविरामम् । कल-कल-नाद-मिषेण अजसम् । गायति कर्ण-मनोहर-गानम् ॥ १ ॥

> अरुणोदयो भवति पूर्वस्याम् । किरणावली शोभते नद्याम् ॥ बहवो जना अत्र आगत्य । प्रकुर्वते बहुविधं कृत्यम् ॥ २ ॥

कश्चिद् जनः हस्तौ प्रचाल्य। पादौ प्रचालयति इदानीम्।। कश्चित् कुरुते दन्तधावनम्। जिह्ना-शुद्धिम् अथ गण्डूषम्।। ३।। कश्चिद् वस्ताण्यवतारयति ।
कश्चित् स्नाति सुखम् अनुभवति ॥
कश्चित् कलयति शोधनगुटिकाम् ।
वारं वारं मज्जति नद्याम् ॥ ४ ॥
वरकेण निजं गातं प्रोञ्छति ।
परिधत्ते वस्ताणि च पठति—
जय जय यमुने ! हर हर गङ्गे !
जय गोदावरि ! तरलतरङ्गे ! ॥५॥

निर्देश: — हाथ पैर धोने आदि अभिनय कराने के साथ पाठ पढ़ाना चाहिए।



I STATE THIS BY

AND AND THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY.

# परिशिष्टम्

#### लघु गणना

एकम्	8	पोडश	१६	चत्वारिंशत्	80
द्ध	2	सप्तदश	१७	पश्चाशत्	40
नीणि	3	अप्टाद्श	28	पष्टिः	६०
चत्वारि	8	<b>ऊनविंशतिः</b>	१९	सप्ततिः	90
पश्च	4	विंशतिः	२०	अशीतिः	60
षट्	Ę	एकविंशतिः	38	नवतिः	९०
सप्त	(9	द्वाविंशतिः	२२	शतम्	200
अष्ट	6	तयोगिंशतिः	२३		
नय	9	चतुर्विंशतिः	28		
दश	90	पश्चिवंशतिः	२५	11191	
एकादश	88	पड्विंशतिः	२६	कति फला	ने ?
द्वाद्श	१२	सप्तिशिक्षतिः	२७	90. /	11
त्रयोदश	१३	अष्टार्विश्वतिः	२८	Service Services	E.
चतुर्दश	58	<b>ऊनित्रात्</b>	२९	A SOL	
पश्चदश	१५	<b>लिंशत्</b>	३०		-

निर्देश: - पहले दिन केवल १० तक गणना पढ़ाकर धीरे धीरे आगे बढ़ा दी जाय।

# शब्दार्थं

#### प्रथम पाठ

वालिका = लड़की । लिखति = लिखती है। एपा = यह। पठित = पढ़ती है। लेखनी = कलम। अस्ति = है। पट्टी = तख्ती। कङ्कतिका = कंघी। ऊर्मिका = अंगूठी।

#### द्वितीय पाठ

एतत् = यह । किम् = क्या (वस्तु)। एपः = यह । गेन्दुकः = गेंद् । एकः = एक । वालकः = लड़का । पठित = पढ़ता है। विडाली = विल्ली ।

दुग्धम् = दूध । पित्रति = पीती है । कुक्कुरः = कुत्ता । रोटिकाम् = रोटी (को ) । खादति = खाता है । एका = एक । घटी = घड़ी । आम्रम् = आम ।

#### तृतीय पाठ

एतत् = यह । एकम् = एक । पुष्पम् = फूल । जलपालम् = लोटा । पानपालम् = गिलास । मसीपालम् = दवात । लिव-लम् = चाक् । पुस्तकम् = किताव । कदलीफलम् = केले की फली । नारङ्गम् = नारंगी । स्वचिः = स्वर्ह । कर्तनी = कैंची । दीप-श्रालाका = दियासलाई । वानरः = बन्दर ।

### चतुर्थ पाठ

त्वम् = तुम ( एक ) । किम्—क्या । करोपि = करते हो । अहम् = मैं । ओदनम् = भात, चावल । मोदकम् = लड्ड् मिठाई । फलानि = बहुत फल । खादामि = खाता हूँ । जलम् = पानी । पिवामि = पीता हूँ । चायाम् = चाय को । निह = नहीं । पिविसि = पीते हो । भवान् = आप ( पुरुष ) । खेलति = खेलते हैं ( एक ) । आम् = हाँ । श्रीमन् = श्रीमानजी ( सम्बोधन ) ।

#### पश्चम पाठ

पद्यानि = पद्य ।

प्रतिदिवसम् + अहम् = प्रत्येक दिन मैं। पाठम् = पाठ (को)। लेखम् = लेख (को)। करोमि = करता हूँ। खेलाम् = खेल (को)। सदा = हमेशा। पठिस = पढ़ते हो। चलिस = चलते हो। प्रातःकाले = सबेरे में। सायङ्काले = शाम को। कदाचित् = कभी। चलित = चलता है। हसित = हंसता है।

#### षष्ठ पाठ

करोति = करता है । मानवः = आदमी । नेताभ्याम् = आँखों से । पश्यित = देखता है । कर्णाभ्याम् = कानों से । गानम् = गाना । शृणोति = सुनता है । नासिकया = नाक से । सुगन्धिम् = सुगन्ध (को )। जिघ्रति = संघता है । दक्षिणेन = दाहिने । हस्तेन = हाथ से । वामेन = वायें। आसने = आसनपर । उपित्रशति = बैठता है । उत्तिष्ठति = उठता है ।

मुखेन = मुँह से । भोजनं करोति = खाता है । कथाम् = कथा

कहानी को । वदति = बोलता है । पृच्छति = पूछता है ।

यस्मिन् समये = जिस समय । तस्मिन् = उस । दन्ताः = दाँत ।

हत्यन्ते = दिखाई देते हैं । शुक्लाः = सफेद, चमकीले ।

मनोहराः = मन को खुशकरनेवाले । भवन्ति = होते हैं ।

#### सप्तम पाठ

यह नदी (अविरामम् = ) निरन्तर (वहति = ) वहरही है। (अजस्रम् = ) निरन्तर कल कल (नाद = ) ध्वनि के (मिपेण = ) वहाने से मानो यह (कर्णमनोहर-गानम् = ) कानों को आनन्द देने वाला गान (गायति = ) गारही हो।।

(पूर्वस्याम् = ) पूर्विद्शा में (अरुणोद्यः = ) सूर्य का उदय (भवित = ) हो रहा है। (किरणावली = ) सूर्य की किरणें (नद्याम् = ) नदी में (शोभते = ) वहुत सुन्दर दिखाई देरही हैं। (वहवः = ) वहुत (जनाः = ) आदमी (अल = ) यहाँ नदी के समीप में (आगत्य = ) आकर के (वहुविधं कृत्यम् = ) अनेक प्रकार के कार्य (प्रकुर्वते = ) कर रहे हैं।।

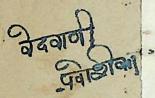
(कश्चिद् जनः = ) कोई आदमी (हस्तौ = ) दोनों हाथ (प्रक्षाल्य = ) धोकर (इदानीम् = ) अव (पादौ = ) पैर (प्रक्षालयित = ) धो रहा है। कोई (दन्तधावनम् = ) दाँत्न, (जिह्वाशुद्धिम् = ) जीभ की सफाई (अथ = ) और (गण्ड्यम् = ) कुल्ला कर रहा है।।

कोई आदमी ( बस्नाणि + अवतारयति = ) कपड़े उतारता है। कोई (स्नाति = ) नहाता है।

(सुखम् = ) सुख को (अनुभवित = ) अनुभव करता है। कोई वदन पर (शोधनगुटिकाम् = ) सावुन को (कलयित = ) लगाता है। वार-वार नदी में (मजित = ) डविकयाँ लगा रहा है और अब (वरकेण = ) तौलिये से (निजम् = ) अपने (गातम् = ) गात को (प्रोञ्छिति = ) पोंछता है कपड़े (परिधत्ते = ) पहिनता है (च = ) और जय तरक्ने इन पदों को पढ़ता है।

(यमुने ! तुम्हारी जय हो ! गङ्गे ! हमारे पापों को दूर करो । चश्चल लहरों वाली गोदावरि ! तुम्हारी जय हो । )

शब्दार्थ सम्बन्धी निर्देश:—यहाँ के जो संस्कृत शब्द हिन्दी में अप्रचलित हैं उनका अर्थ वालकों को याद करा दिया जाय।



प्राप्तिस्थानम्— बौखञ्चा संस्कृत सीरीज आफिस पो. बा. नं. ८, बाराणसी-१

मूस्य १—००